गंगा से भी झूठ, नर्मदा से भी झूठ

रविश कुमार

भारत में पिछले चार साल का इतिहास चुनावी जीत के साथ चुनावी झूठ का भी इतिहास है। इस झूठ को एक ईवेंट की तरह जनता के सामने उतारा गया, मीडिया को लगाकर उसे सत्य के करीब बनाया गया और चुनाव समाप्त होते ही सब उस झूठ को वहीं छोड़ रवाना हो गए। नेता सत्ता ले गया और जनता उस झूठ के साथ वहीं की वहीं रह गई।

आपको याद होगा मतदाता को दर्शक बनाने के लिए एक तमाशा किया गया था। पानी में उतरने वाला प्लेन उतारा गया ताकि नए सपने या नए नए झांसे दिखाए जा सके। उम्मीद है लोग रोज़ उस प्लेन से साबरमती में उतरते होंगे। दूसरा झूठ था जिसका अब पर्दाफाश हुआ है। वह झूठ है नर्मदा का पानी गुजरात पहुंचाए जाने का झूठ। उस वक्त जनता को सपने दिखाए गए कि नर्मदा के इस पानी से क्या क्या होगा, अब गर्मी आने से पहले गुजरात सरकार ने कह दिया है कि 15 मार्च से सिंचाई के लिए जलाशय का पानी नहीं मिलेगा।

लेकिन चुनावों के दौरान लगे कि पानी आ गया है इसके लिए मध्य प्रदेश के लिए ज़रूरी पानी के भंडार को गुजरात रवाना कर दिया गया। पानी की रफ्तार और मात्रा बढ़ा दी गई ताकि प्रधानमंत्री जब 17 सितंबर 2017 को उदघाटन करने आएं तो जलाशय भरा रहे और भरे जलाशय को दिखा कर वह अपना भाषण लंबा खींच सकें। ऐसा ही हुआ, भाषण ख़त्म हुआ और अब पानी भी ख़त्म हो चुका है। क्या उस दौरान 17 सितंबर तक पानी पहुंचाने के लिए जो पानी छोड़ा गया उसके लिए मध्य प्रदेश के नर्मदा घाटी प्राधिकरण पर सुरक्षा के मानकों से खिलवाड़ करने के लिए दबाव डाला गया?

सबसे पहले स्क्रोल और अब इंडियन एक्स्प्रेस की सौम्या अशोक ने इस झूठ की पोल खोल दी है। सरदार सरोवर बांध का पानी अपने न्यूनतम स्तर पर पहुंच गया है। तब चुनाव को देखते हुए अधिकतम स्तर पर पहुंचा दिया गया था। रविवार के इंडियन एक्सप्रेस में अविनाश नायर और परिमल दाभी की दो पेज की लंबी रिपोर्ट छपी है। ज़मीन दरक गई है और किसान ठगा हुआ अपने सपनों को भाप बनकर उड़ता देख रहा है। आप फ्राड और झूठ की राजनीति को समझना चाहते हैं तो दोनों रिपोर्ट पढ़ने की मेहनत कर लीजिएगा।

आधिकारिक दस्तावेज़ों के आधार पर रिपोर्टर ने लिखा है कि पांच दिनों तक मध्य प्रदेश ने अप्रत्याशित रूप से पानी छोड़ा है ताकि जल्दी गुजरात पहुंच कर वह चुनावी झूठ दिखाने में काम आ सके। जलाशय की तरफ पानी छोड़े जाने की एक सीमा है। उसकी धार की रफ्तार तय है। रिकार्ड बताते हैं कि उस दौरान तीन दिनों तक पानी पांच गुना ज़्यादा छोड़ा गया। मोदी जी ने उद्घाटन किया और पानी की रफ्तार रोक दी गई। गुजरात में गर्मी आने से पहले ही सरकार ने एलान कर दिया है कि वह 15 मार्च से जलाशय का पानी सिंचाई के लिए नहीं देगी।

12 से 17 सितंबर के बीच पांच दिनों में पानी का स्तर 3.39 मीटर ऊंचा हो गया। जबकि 1 से 28 अगस्त 2017 के बीच 15 दिनों तक पानी छोड़ने पर पानी का स्तर 2 मीटर ही बढ़ा। मध्य प्रदेश ने 777 मिलियन क्यूबिक मीटर पानी छोड़ा था। आम तौर पर किसी भी जलाशय में एक सेकेंट में 3 लाख 63 हज़ार 300 लीटर की रफ्तार से छोड़ा जाता है, उस दौरान 19 लाख, 31 हज़ार 400 लीटर की रफ्तार से पानी छोड़ा गया। छह गुना ज़्यादा।

इससे अहमदाबाद, मोरबी और सुरेंद्र नगर के लाखों किसानों की आंखें चमक गईं। उन्होंने भरा हुआ जलाशय देखा तो अपनी खेती के फिर से सोना में बदलने के सपने देख लिए। अब उन्हें समझ नहीं आ रहा है कि क्या करें। पानी नहीं देने का एलान हो चुका है। बीच में फसल बर्बाद हो गई तो उसका कर्ज़ा कैसे उतारेंगे। नर्मदा घाटी प्राधिकरण आम तौर पर गुजरात को पानी देता था, इस साल उससे भी 45 प्रतिशत कम पानी मिला है।

पता कीजिए कहां चुनाव है, कहां पर इस तरह से सपने दिखाने के लिए झूठ की इमारत बनाई जा रही है। उस वक्त नर्मदा के कमांड इलाके में पानी आने से हरियाली आ भी गई थी। अब जब पानी उतर रहा है, खेत फिर से सूखने लगे हैं। झूठ दिखने लगा है । गंगा भी इस झूठ के साथ जी रही है और अब नर्मदा भी। झूठ सिर्फ गुजरात के किसानों से नहीं बोला गया, नर्मदा से भी बोला गया। जब नदियों को देवी ही मानते हैं तो कम से कम भक्ति की ख़ातिर ही सही उनके नाम पर झूठ तो न बोला जाए। क्या नेता वाकई इन नदियों को नाला समझते हैं, जब जो चाहा बोल दिया, दिखा दिया?

भगत सिंह युवाओं के प्रेरणा स्रोत तब भी थे और आज भी

पेज चार का शेष

अमेरिका के युवक दल के नेता पैट्रिक हेनरी ने अपनी ओजस्विनी वक्तृता में एक बार कहा था-

Life is a dearer outside the prisonwalls, but it is immeasurably dearer within the prison-cells, where it is the price paid for the freedoms fight.

अर्थात् जेल की दीवारों से बाहर की जिन्दगी बड़ी महँगी है,पर जेल की काल कोठरियो की जिन्दगी और भी महँगी है क्योंकि वहाँ यह स्वतन्त्रता-संग्राम के मूल्य रूप में चुकाई जाती है।

जब ऐसा सजीव नेता है, तभी तो अमेरिका के युवकों में यह ज्वलन्त घोषणा करने का साहस भी है कि,

"We believe that when a Government becomes a destructive of the natural right of man, it is the manÓs duty to destroy that Government."

अर्थात् अमेरिका के युवक विश्वास करते हैं कि जन्मसिद्ध अधिकारों को पद-दलित करने वाली सत्ता का विनाश करना मनुष्य का कर्तव्य है।

ऐ भारतीय युवक! तू क्यों गफलत की नींद में पड़ा बेखबर सो रहा है। उठ, आँखें खोल, देख, प्राची-दिशा का ललाट सिन्दूर-रंजित हो उठा। अब अधिक मत सो। सोना हो तो अनंत निद्रा की गोद में जाकर सो रह। कापुरुषता के क्रोड़ में क्यों सोता है? माया-मोह-ममता का त्याग कर गरज उठ-

"Farewell Farewell My true Love
The army is on move;
And if I stayed with you Love,
A coward I shall prove."

तेरी माता, तेरी प्रातस्मरणीया, तेरी परम वन्दनीया, तेरी जगदम्बा, तेरी अन्नपूर्णा, तेरी त्रिशूलधारिणी, तेरी सिंहवाहिनी, तेरी शस्यश्यामलांचला आज फूट-फूटकर रो रही है। क्या उसकी विकलता तुझे तनिक भी चंचल नहीं करती? धिक्कार है तेरी निर्जीवता पर! तेरे पितर भी नतमस्तक हैं इस नपुंसकत्व पर! यदि अब भी तेरे किसी अंग में कुछ हया बाकी हो, तो उठकर माता के दूध की लाज रख, उसके उद्धार का बीड़ा उठा, उसके आँसुओं की एक-एक बूँद की सौगन्ध ले, उसका बेड़ा पार कर और बोल मुक्त कण्ठ से-

वंदेमातरम् ! (रचनाकाल - 1925
लेखक - भगत सिंह, लेख का शीर्षक - युवक
प्रकाशित - साप्ताहिक मतवाला, खण्ड 2, अंक 38 दिनांक 16 मई 1925)
प्रस्तुति : विजय शंकर सिंह

खबर (दार) झरोखा

दीपकमल सहारन

देसी दारू हो गई है भाजपा, फटाफट चढ़ती है, सटासट उतरती है

लोग उलझन में हैं कि भाजपा के प्रति देश में माहौल क्या है, लोग मोदी और बीजेपी को पसंद कर रहे हैं या अब नापसंद करने लगे हैं। एक तरफ जहां यह पार्टी त्रिपुरा और उत्तरप्रदेश जैसे राज्य फतेह कर रही हैं, वहीं दूसरी ओर उन तमाम जगहों पर उपचुनाव हार रही है जहां वो कुछ समय पहले तक काफी मजबूत थी। यहां तक कि गुजरात में भी बड़ी मुश्किल से सरकार बचा पाई।

ये दोनों ही पहलू तथ्यात्मक हैं और इसमें कोई संयोग नहीं है। दोनों सच पर आधारित हैं। और सच यह है कि जिन क्षेत्रों में भाजपा नहीं है, वहां पार्टी को जबरदस्त फायदा हो रहा है। खासकर हिन्दी भाषी राज्यों में बीजेपी आसानी से कांग्रेस को सत्ता से बाहर कर रही है। उत्तरप्रदेश में क्षेत्रीय दल समाजवादी पार्टी और त्रिपुरा में वाम दलों को भी भाजपा ने करारी शिकस्त देकर सत्ता से बाहर किया है।

लेकिन उसी उत्तरप्रदेश में मुख्यमंत्री की लोकसभा सीट गोरखपुर पर पार्टी औंधे मुंह गिरी जहां वो 35 साल से नहीं हारी थी, और जिस लोकसभा सीट में सभी विधायक भाजपा के हैं।

लेकिन इससे आगे कुछ और सच हैं जिन पर ना मीडिया का ध्यान है, ना भाजपा जिन पर चर्चा करना चाहती। वो ये है कि जहां लोगों ने भाजपा को सत्ता दे रखी है, वहां चुनाव होने पर भाजपा को नुकसान हो रहा है। लगभग हर ऐसी जगह जहां बीजेपी सत्ता में थी, वहां पिछले सालों में हुए चुनावों में पार्टी का ग्राफ गिरा ही है।

मई 2014 में नरेंद्र मोदी जी के प्रधानमंत्री बनने के बाद गुजरात और गोवा में भाजपा की सरकार होते हुए चुनाव हुए, गुजरात में पार्टी की सीटें 115 से घटकर 99 रह गई और गोवा में 21 से घटकर 13. हालांकि सरकार दोनों जगह फिर से भाजपा ने ही बनाई। पंजाब में भाजपा की सीटें 12 से घटकर 3 रह गई और उनका गठबंधन सत्ता से बाहर हो गया। बिहार में कुछ दिन पहले तक नितीश कुमार के साथ सत्ता में रही भाजपा को चुनाव होने पर काफी नुकसान हुआ और सीटें 91 से घटकर 53 रह गई। एकमात्र राज्य जहां बीजेपी सत्ता में थी और उसकी सीटें बढ़ी, वो है झारखंड। बीजेपी का गठबंधन वहां सत्ता में था और मुख्यमंत्री झारखंड मुक्ति मोर्चा के हेमंत सोरेन थे।

यानी बीजेपी को सत्ता दे चुके लोग जल्द ही असंतुष्ट हो रहे हैं और केंद्र में पार्टी की सरकार होने के बावजूद बीजेपी को पहले से कम वोट दे रहे हैं। केंद्र या राज्य में सत्ता में होने का जहां किसी आमतौर पर किसी दल को फायदा मिलता है, वहीं बीजेपी के लिए यह नुकसान की बात साबित हो रही है।

एक विशेष पहलू ये भी है कि मई 2014 से अब तक 10 गैर हिन्दी ऐसे राज्यों में चुनाव हो चुके हैं जहां लोगों ने बीजेपी को एंट्री देने से साफ मना कर दिया है। आंध्रप्रदेश (239 में से 9), उड़ीसा (147 में से 10), सिक्किम (32 में से 0), तेलंगाना(119 में से 5), तमिलनाडु (234 में से 0), पश्चिम बंगाल (294 में से 6), केरल (140 में से 1), पांडुचेरी (36 में से 0), मेघालय (36 में से 0), मेघालय (70 में से 2), नागालैंड (60 में से 12) ऐसे राज्य हैं जहां बीजेपी महत्वपूर्ण दल नहीं बन पाई है। ये सभी राज्य क्षेत्रीय दलों के पास थे, और लोगों ने उन्हें ही सत्ता में रखा है। नागालैंड में बीजेपी सहयोगी दल के तौर पर सत्ता में हिस्सेदार हो गई है।

निचोड़ ये है कि कांग्रेस के मुकाबले लोग बीजेपी को बहुत पसंद कर रहे हैं, लेकिन जहां बीजेपी पहले से सत्ता में है, वहां लोग उनसे निराश हो रहे हैं। यानी मोदी युग में बीजेपी का नशा बहुत जल्दी सिर चढ़कर बोलता है, और बहुत जल्दी नशा उतर भी रहा है।

संघी टोल जानो, 20 रुपए खाने के हिसाब से मुंबई मार्च वाले 30 हज़ार किसानों को 1 करोड़, 80 लाख रुपए का खाना कैसे मिला...

मंयक सक्सेना

तो एक काम कीजिए, गूगल कीजिए...देखिए वो समाचार चैनल्स के इंटरव्यू, जिनमें गुरुद्वारों से लेकर सड़क तक सिख समुदाय, मंदिरों के सेवक, मस्जिदों के नमाज़ी, मदरसों के तालिब और गांव-शहर-सड़क के लोग, ढाबे वाले इनके लिए खानो-पानी और विश्राम के प्रबंध में लगे थे...

वो ये कर रहे थे और कर पा रहे थे क्योंकि वे अभी भी मनुष्य हैं...और वो नासिक से मुंबई तक ये कर रहे थे, क्योंकि वे अभी भी आपके असर से इतना अछूते हैं कि उनके मन में मनुष्यता बची है...

इन लोगों में भाजपा यानी कि आपके वोटर भी थे...आपके समर्थक भी थे...और अब जब आप सोशल मीडिया से व्हॉट्सएप तक ये सवाल पूछ रहे हैं...तो वे वाकई आपका कॉलर पकड़ कर जवाब देना चाहते होंगे...पर फिर भी, चुनाव आएंगे और वो जवाब दे देंगे...

आप उन में नहीं थे, जो किसानों को खाना खिला रहे थे...उनको चप्पलें लाकर दे रहे थे...उनको दवाएं लगा और खिला रहे थे...उनको गीत सुना रहे थे...उनको पानी बांट रहे थे...

शाम को आंदोलन की समाप्ति की घोषणा के बाद...आज़ाद मैदान के बाहर की एक चाय-नाश्ते की दुकान चलाने वाला परिवार...अपने पूरे परिवार के साथ खड़ा...बाहर निकल, अपने गांव की ओर वापस लौट रहे एक-एक किसान को जूस का टेट्रापैक और नाश्ता दे रहा था...ठीक वैसे ही, जैसे आपके घर वाले आपको रेल पकड़ते वक्त देते हैं...मैं उस परिवार को खड़ा निहार रहा था, जो सख्ती से दुकान का हिसाब-किताब करता है...पर पूरे परिवार की आंखों में पानी था...

आज़ाद मैदान से सोमैया मैदान तक, मैं उन परिवारों को देख कर आया हूं, जो अपने बच्चों के साथ वहां थे...दवाएं देते...खाना देते...नाश्ता कराते...टॉफी बांटते... जिसकी जैसी आर्थिक हैसियत थी, वह वैसा कर रहा था...जिसकी जेब जितनी छोटी थी, उसकी झोली उतनी ही उदार थी...

आप जानते क्या हैं इस देश के बारे में? आप जो भी करते हों और कहते रहें...इस देश के आम लोग, किसान को किसान की तरह देखते हैं...वो झंडा नहीं देखते...वो पैरों के ज़ख्म और बिवाईयां देखते हैं...आप मनुष्य से ट्रॉल हो गए हैं, तो सब नहीं हो गए हैं...

मुंबई में किसानों के लिए जिस तरह से लोगों ने समर्थन दिखाया है, वह ही तो शायद हम कब से देखना चाहते थे...ये खाना-दवा-चप्पल बांटते वही लोग थे, जो आपकी रैलियों में भी आए...नरेंद्र से लेकर नरेश तक, सभी को वोट भी दिया...तो इनको भी कहिए देशद्रोही...

जब दिमाग में धर्मांधता की दीमक लगती है, तो सबसे पहले मस्तिष्क और विवेक को खाती है...अगर आपको ये किसान, किसान नहीं लगते, तो यकीन मानिए, आपको मनुष्य, मनुष्य नहीं दिखेगा...हां, गाय ज़रूर देवी दिखती रहेगी...जब तक कि वह मनुष्य की जान लेने के काम आए...

ज़रा देख लीजिएगा मदरसे के उन छात्रों की तस्वीरें...उन गृहणियों के चेहरे, उन सिख सेवादारों के हाथ, अम्बेडकरवादी एक्टिविस्टों के पानी के पाउच...

और हां, हिसाब हम भी पूछेंगे कि आखिर चुनाव में खर्च करने के लिए हज़ारों करोड़ कहां से आते हैं...और चुनाव जीते जाने के बाद, जो हज़ारों करोड़ बांटे जाते हैं...क्या वो खर्च के लिए जो इन्वेस्टमेंट था, उसका ही प्रॉफिट बंट रहा है... पर ये सवाल, हम ढंग से पूछेंगे...सुबूतों के साथ...झूठ के साथ नहीं...याद रहे, हम जनता हैं...और हम ही असली विपक्ष हैं...2014 में विपक्ष थे, तो कांग्रेस को सत्ता से बाहर किया...इस बार....याद रहे, हम विपक्ष हैं...और ऐसे विपक्ष हैं कि जब विपक्षी पार्टी इस आंदोलन में दिख भी नहीं रही थी, तब भी हम यानी कि जनता ही इसके साथ खड़े थे, अपने हाथों में भोजन-दवा और मदद लेकर...

अगर अभी भी दिल न भरा हो, तो एक बार ढूंढ लेना वो तस्वीरें, जो मुंबई में किसानों के मार्च पर फूल बरसाते लोगों की हैं...दिल का दौरा आए, तो मदद मांगना...जनता अभी भी मनुष्य है, ट्रोल नहीं है...

अबे तुम इंसान हो कि ट्रोल
शर्म न आए तो भी मर जाओ
नीरो और उसके ट्रोल्स
एक दिन सब देशद्रोही हो जाएंगे

शर्म मगर उनको नहीं आयेगी

भाजपा नेता पूनम महाजन ने 180 किमी पैदल नासिक से मुम्बई चलकर आये किसानों को शहरी माओवादी का खिताब दिया है। फ़ोटो में एक झलक इस पदयात्री महिला के पांव देखिए, जो चलने से बेहाल हुए हैं ।

शर्म मगर उनको नहीं आएगी। महाराष्ट्र की भाजपायी देवेंद्र फड़नवीस सरकार को झुक कर इन किसानों की सारी माँगे माननी पड़ी हैं- क़र्ज़ माफ़ी, क़ीमत गारंटी और कृषि भूमि पर अधिकार को लेकर अब उन्हें और टरकाना सम्भव नहीं तुम संघियों के लिए पूनम महाजन।